# जयप्रकाश नारायण का सामाजिक चिंतन

संगीता कुमारी

मार्क्सवाद से प्रभावित होने के बाद स्वतंत्रता के आदर्श की तरह ही समानता के आदर्श ने भी जयप्रकाश के चित्त पर अपना अधिकार जमा लिया था। अकेली स्वतंत्रता पर्याप्त नहीं। इस स्वतंत्रता के साथ शोषण, भूखमरी और दरिद्रता से मुक्ति भी जुड़नी चाहिए। जयप्रकाश के दिमाग में यह बात बैठ गई थी कि इसके लिए मार्क्सवाद ही सबसे अधिक सन्तोषजनक उपाय है। उनके मन में इस बात को लेकर बड़ी अधीरता थी कि हिन्दुस्तान को इस रास्ते तेज रफ्तार के साथ कैसे आगे बढ़ाया जाए।

स्वराज्य के आन्दोलन मे जुड़ने के बाद जब उन्हें पहली बार जेल में रहने का मौका मिला, तो वहाँ सबसे अधिक चिन्तन इसी विषय पर किया। सन् 1932 में नासिक जेल में उस समय अच्चुत पटवर्धन, मीनू मसानी, अशोक मेहता, प्राध्यापक दाँतवाला आदि अनेक अघ्ययनशील और चिन्तनशील युवक कार्यकर्त्ता इकट्ठा हो गए थे। इन सब युवकों के मन में गांधीजी के प्रति श्रद्धा तो अवश्य थी। उनके सिपाही बनकर ही तो यह जेल में आए थे। फिर भी सत्य-अहिंसा-संबंधी गांधीजी के विचार और उनका जीवन-दर्शन उनके गले उतरा नहीं था। जयप्रकाश मार्क्सवादी बन चुके थे। इसलिए गांधीजी के बहुत से विचार और कार्यक्रम उनके गले नही उतरते थे।

नौजवान सोचते थे कि इस तरह जेलें भरते रहने से स्वराज्य कैसे मिल सकेगा। सिर्फ चरखा चलाते रहने से अंग्रेज यहाँ से कैसे चले जायेंगे। आखिर हिंसक क्रांति के बिना अंग्रेजों के नागपाश से छुटकारा कैसे मिलेगा। गांधीजी में बड़ा लोक-आन्दोलन खड़ा करने की शक्ति है, लेकिन नौजवानों को विश्वास नहीं हो रहा था कि केवल इसी से अंग्रेज देश छोड़कर चले जायेंगे। जेल से छूटने के बाद सब किसी हिंसक आन्दोलन की तैयारी में लग जायेंगे, लेकिन मन में यह ख्याल बना रहता था कि आखिर किसी न किसी तरह की हिंसक क्रांति की आवश्यकता तो पड़ेगी हीं। इसी के साथ मन में ये विचार भी उठते थे कि अंग्रेजों को निकाल देने के बाद जो स्वराज्य आएगा, उसका स्वरूप क्या होगा। कांग्रेस के अबतक के कार्यक्रमों में से तो स्वराज्य का कोई स्पष्ट चित्र सामने आता नहीं था। स्वराज्य मिलने के बाद देश किस दिशा में बढ़ेगा, इसका भी कोई अंदाज बैठना चाहिए। इस तरह के सवाल खासतौर पर सामने थे कि आजादी के आन्दोलन को किस तरह जोरदार बनाया जाए, किस तरह वह जल्दी सफल हो और आनेवाले स्वराज्य का स्वरूप क्या हो।

जयप्रकाश की आँखों के सामने मार्क्सवादी समाजवाद का सपना था। दूसरे मित्र भी मार्क्सवाद के द्वारा नहीं, बल्कि इंग्लैंड, फ्रांस आदि के समाजवादी विचारों के द्वारा देश में समाजवाद लाने का सपना देखने लगे थे। इसलिए ये सब इस निर्णय पर पहुँचे कि स्वराज्य के बाद हिन्दुस्तान के लिए एक समाजवादी समाज का चित्र देश के सामने पेश किया जाना चाहिए और उसे अमली रूप देने के लिए नौजवानों, मजदूरों, किसानों आदि को संगठित करना चाहिए।

शोध छात्रा,इतिहास विभाग,मगध विश्वविद्यालय,बोधगया, बिहार।

आखिर तय यह किया गया कि इसके लिए कोई अलग संस्था खड़ी न की जाय, बल्कि जो कांग्रेस इस समय देश में लोक आन्दोलन का प्रतिनिधित्व कर रही है, उसी के अन्दर रहकर यह काम किया जाय और धीरे-धीरे समूची कांग्रेस को ही समाजवाद की दिशा में ले जाया जाए। इनका नाम कांग्रेस-समाजवादी पक्ष रखा जाए। कई मित्र चाहते थे कि नाम कांग्रेस-समाजवादी 'ग्रुप' रहे। लेकिन जयपकाश का विशेष आग्रह था कि इसे 'कांग्रेस-समाजवादी पक्ष' कहा जाए, और इसका अपना विधान आदि भी बनाया जाय। तैयारी इस तरह की जाए की चलकर अलग होने की जरूरत मालूम हो, तो अलग हुआ जा सके।

जयप्रकाश की कल्पना इस से भी अधिक व्यापक थी। वे मार्क्सवाद को ऐसा स्वरूप देना चाहते थे, जो हिन्दुस्तान की परिस्थिति के अनुरूप हो। वे कहते थे, मैं मार्क्स को मानता हूँ। मैं स्टालिन से और दूसरे कइयों से अधिक अच्छा मार्क्सवाद को एक विज्ञान मानता हूँ। यदि मार्क्सवाद एक विज्ञान है तो मार्क्स ने जो कहा वही अन्तिम सत्य है। हिन्दुस्तान को आज की परिस्थिति के अनुरूप मार्क्सवाद के स्वरूप को विकसित करना चाहते थे।

वे अपने देश में एक ऐसी स्वतंत्र समाजवादी शक्ति खड़ा करना चाहते थे, जो रूस के प्रभाव और अंकुश से मुक्त हो। जयप्रकाश का सपना यह था कि यह शक्ति राष्ट्रीय आन्दोलन के साथ रहकर काम करे, राष्ट्रीय आन्दोलन और समाजवादी आन्दोलन दोनों एक हो जाय। उनका उद्देश्य यह था कि कांग्रेस-समाजवादी पक्ष राष्ट्रवाद और समाजवाद को पुष्ट करता रहे और उन्हें संगठित और सक्रिय बनाए रहे।

यों, युसूफ मेहर अली के शब्दो में : जब सन् 1993 में जयप्रकाश नासिक जेल से छुटकर बाहर आए तो वो एक विचार, एक उद्देश्य और एक दृष्टि लेकर बाहर आए थे। आगे इसी के फलस्वरूप कांग्रेस-समाजवादी पक्ष का जन्म हुआ।

सन् 1933 के अन्त में जयप्रकाश जेल से छूटे और उसके तुरन्त बाद 1934 के जनवरी महीने में बिहार में जबरदस्त भूकम्प हुआ। जयप्रकाश राहत के कामों जुट गए। इसके बाद 17 मई, 1934 के दिन पटना में समाजवादी विचार में आस्था रखने वाले मित्रों की एक तदर्थ परिषद् आचार्य नरेन्द्रदेव की अध्यक्षता में हुई। उसमें एक समिति गठित की गई। उसके संगठन मंत्री के रूप में जयप्रकाश ने पूरा देश घुम डाला। 1934 के अक्टूबर महीने में सम्पूर्णानन्दजी से तालमेल नही बैठ सका। वे अपने देश में एक ऐसी स्वतंत्र समाजवादी शक्ति खड़ा करना चाहते थे, जो रूस के प्रभाव और अंकुश से मुक्त हो। जयप्रकाश का सपना यह था कि यह शक्ति राष्ट्रीय आन्दोलन के साथ रहकर काम करें, राष्ट्रीय आन्दोलन भी समाजवादी की तरफ झुके और अन्त में राष्ट्रीय आन्दोलन और समाजवादी पक्ष राष्ट्रवाद और समाजवाद को पुष्ट करता रहे और उन्हें संगठित और सक्रिय बनाए रखे।

इस आन्दोलन में कांग्रेस-समाजवादी पक्ष की विधिवत् स्थापना हुई। आचार्य नरेन्द्रदेव इसके अध्यक्ष बने और 32 साल की उम्र वाले जयप्रकाश को प्रधान मंत्री-पद की जिम्मेदारी सौंपी गई। इस प्रकार देश के राजनीतिक क्षेत्र की मुख्य धारा में समाज-परिवर्तन की और समाजवाद की बात को अग्रस्थान दिलाने का श्रेय जयप्रकाश को और उनके कांग्रेस-समाजवादी पक्ष का है।

कांग्रेस-समाजवादी पक्ष की नीतियों और काम-काज पर जयप्रकाश के व्यक्तित्व का और विचारों का बहुत प्रभाव रहा। जयप्रकाश ही इस पक्ष के प्राण-पुरुष रहे। यह कहना गलत नहीं होगा कि जयप्रकाश के विचारों के विकास के साथ ही भारत में समाजवाद के विचार का विकास होता गया।

सन् 1936 में जयप्रकाश की 'व्हाय सोशियालिज्म'? (समाजवाद क्यों?) नामक पुस्तक प्रकाशित हुई। दूसरे प्रान्तों में भी साम्यवादियों ने कांग्रेस समाजवादियों के अन्दर घुसकर धीरे-धीरे अपने पैर फैलाने की और समाजवादी कार्यकर्त्ताओं को प्रभावित करके उन्हें अपने में सम्मिलित करने की कोशिशे की। लेकिन जब सर्वश्री मसानी, लोहिया, अच्युत और अशोक के समान साथियों ने कार्यकारिणी से त्याग पत्र दे दिया। फलस्वरूप दक्षिण प्रान्तों में समाजवादी पक्ष अपने जड़े जमा नहीं सका, और इससे साम्यवादियों को बहुत लाभ हुआ। सन् 1940 में रामगढ़-अधिवेशन के समय कार्यकारिणी ने साम्यवादियों को अपने बीच से निकालने का निर्णय किया और उसी के साथ इस करुण प्रसंग का अन्त हो गया। इस सारे प्रकरण का दायित्व अपने सिर लेकर जयप्रकाश ने अपनी गलती कबूल की।

मार्क्सवाद के साथ जयप्रकाश के मन में मास-वर्क की कल्पना भी बहुत अच्छी तरह बैठ गई थी। कांग्रेस के संगठन को सुदृढ़ बनाने में समाजवादियों का भी योगदान रहा। उनके माध्यम से कांग्रेस को युवकों, मजदूरों, किसानों आदि में अधिक प्रवेश मिला।

श्री जवाहरलाल नेहरू के साथ जयप्रकाश का घनिष्ठ-संबंध था। समाजवादी पक्ष के साथ भी जवाहरलाल का निकट का संबंध रहा। कांग्रेस के नेता-मंडल में जो दल थे, उनमें समाजवादियों की गिनती जहवाहरलाल के दल में होती थी। जवाहरलाल समाजवादियों को रूझाने वाले माने जाते थे। जबकि सरदार पटेल, राजेन्द्र बाबू, राजाजी आदि समाजवाद के विरोधक थे।

गांधी के शब्दों में सरकार किस मुँह से जयप्रकाश की निंदा करती है, सच तो यह है कि आज देश की सारी शक्तियों ने सरकार के खिलाफ जंग छेड़ दी है और जंग के नियमों के अनुसार जयप्रकाश द्वारा अपनाए गए साधन ठीक है, उन्होंने सात सालों तक अमेरिका में शिक्षा प्राप्त की है, और इस बात का भी अध्ययन किया है कि पश्चिम के देशों ने आजादी की अपनी लड़ाईयाँ किस तरह लड़ी है।

कांग्रेस-समाजवादी पक्ष की स्थापना होने के बाद जयप्रकाश उसका निश्चित किया गया कार्यक्रम लेकर गांधीजी के पास पहुँचे थे। गांधीजी ने उसे देख लिया, और फिर उसके एक बिन्दु पर अंगुली रखकर उन्होंने कहा ''मेरी नजर में में यह सच्चा समाजवाद है। जयप्रकाश तुम लोग यह करो, तो हम तुम्हारे साथ सौ टक्का हैं, गांधीजी सौ फिसदी नहीं सौ टक्का कहते थे। यह और कुछ नहीं मार्क्स का प्रसिद्ध सूत्र था। फाम ईच अकार्डिंग टु हिज कैपेसिटी एण्ड टु ईच अकार्डिंग टु हिज नीड्स यानी हर एक व्यक्ति से उसकी शक्ति के अनुसार लेना, और हर एक को उसकी जरूरत के मुताबिक देना।

**संदर्भ ग्रन्थ सूची:**


1. गांधीजी के सर्वोदय का अंश
2. गांधीजी के सर्वोदय का अंश
3. हरिजनों में विनोबा जी द्वारा लिखित लेख का अंश

4. तिथि 26/12/48 विनोबाजी
5. काका कालेलकर ने गांधीजी द्वारा लिखित सर्वोदय के अनुवाद पेज संख्या-28
6. सर्वोदय के आधार पेज संख्या-16 विनोबा जी द्वारा विजय बाड़ा में चार दिवसीय व्याख्यान (16 से 19 दिसम्बर) का अंश
7. विनोबाजी लिबड-पेज-19
8. विनोबाजी इष्ड पेज-22
9. विनोबाजी इष्ड पेज-22
10. विनोबाजी इष्ड पेज संख्या-28
11. विनोबाजी इष्ड पेज संख्या-30
12. विनोबाजी इष्ड पेज संख्या-30-31
13. विनोबाजी इष्ड पेज संख्या-31
14. विनोबाजी इष्ड पेज संख्या-33-36
15. विनोबाजी इष्ड पेज संख्या-12
16. विनोबाजी इष्ड पेज संख्या-44
17. विनोबाजी इष्ड पेज संख्या-45
18. विनोबाजी इष्ड पेज संख्या-13
19. विनोबाजी इष्ड पेज संख्या-16
20. विनोबाजी इष्ड पेज संख्या-13
21. विनोबाजी इष्ड पेज संख्या-24
22. जय प्रकाश नारायण: ए पिक्चर ऑफ सर्वोदय सोस्ल ऑर्डर पेज संख्या-1
23. विनोबाजी के भूदान से ग्रामदान के अंश पेज संख्या-83

♦ ♦ ♦